the exploratory work going on. I am afraid, if the exploratory work is not completed within a time-bound schedule, it may so happen that the provision of Rs. 100 crores earmarked in the Sixth Five Year Plan may not prove adequate to cover the entire area under exploration in the Mahanadi basin due to inflationary pressure from cost angle and at the last moment the work will have to be stopped due to paucity of funds. With the increase in the price of crude in the international market, the Government should not soft-pedal the progress of oil exploration which would ultimately be detrimental to the valuable foreign exchange reserve of the country. It is, therefore, urged upon the Government that special attention should be paid to oil exploration work.

It is also urged that since the progress of oil exploration work in the Mahanadi basin by Oil India Ltd. is not satisfactory, the job should be entrusted to ONGC. The Seismic Survey conducted by an expert team from the Soviet Union revealed that a vast reserve of oil can be found in both on-shore and off-shore of Mahanadi basin which, when exploited, could serve the nation's oil requirement to a great extent in future. Keeping the gravity and urgency of the issue in view, Government should take immediate steps on a war footing to resume and complete the oil exploration work in the Mahanadi basin without further delay.

(ii) DEVELOPMENT OF SMALL SCILE INDUSTRIES IN BARMER AND JAISALMER

श्री वृद्धि चन्द्र जैन : (बाड़मेर) : राजस्थान प्रान्त के सीमावर्ती बाड़मेर एवं जैसलमेर जिले प्रांत के ही नहीं बल्कि देश के सबसे पिछड़े क्षत्र हैं।

उक्त क्षत्र में जिप्सम, बैंटानाइट, मुल्तानी मिट्टी, लिगनाइट, राक फास्फेट, चूना नमक, पत्थर आदि के भरपूर भण्डार हैं, जिनके आधार पर कुछ लघु उद्योग स्थापित किये गये हैं और किये जा रहे हैं।

देश में सबसे अधिक ऊन इस क्षेत्र में तैयार होती है। यहां के ऊनी कंबलों ने देश में ख्याति प्राप्त की है। गलीचा एवं जूट पट्टी का उद्योग भी उत्तरोत्तर उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है।

रंगाई छपाई का कार्य बाड़मेर जिले के बालोतरा एवं बाड़मेर नगर में दिनोदिन विकास की ओर अग्रसर हो रहा है और अनेक छोटे उद्योग स्थापित हो रहे हैं।

गवार की पैदावार इस क्षेत्र में बहुत अधिक होती है। बाड़मेर एवं बालोतरा नगर में बवार से आधारित गवारगम लघु उद्योग स्थापित किए जा रहे हैं।

चर्म उद्योग के विकास की बहुत संभावनायें हैं। बालोतरा नगर में 132 के० वी० लाइन एक साल पहले पहुंच चुकी है और बाड़मेर नगर में भी 132 के०वी०लाइन का कार्य तीव्र गति से चल रहा है और उक्त लाइन दिसम्बर 1981 तक पहुंच जाएगी।

बाड़मेर एवं जैसलमेर जिलों में जो कि अधिकतर अकाल से प्रभावित रहते हैं, लघु उद्योगों के विकास और विस्तार से अकाल का मुकाबला करने में सक्रिय सहयोग मिलेगा।

अतः केन्द्रीय उद्योग मंत्री से निवेदन है कि बाड़मेर एवं जैसलमेर जिलों के लघु उद्योगों के विकास एवं विस्तार को विस्तृत करने के लिए और औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े क्षेत्र घोषित करें।